होता है कि चीन की सभ्यता के उदय एवं विकास

चीनी सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ

(KEY FEATURES OF CHINESE CIVILIZATION)

शासन व्यवस्था (Administration)—चीन की शासन व्यवस्था की बात करें तो शांग वंश के काल में चीन की शासन व्यवस्था का उच्चस्तरीय विकास हुआ। प्रशासन प्रबन्ध से सम्बन्धित ऑरकन बोन्स (देववाणी अस्थियों) से ज्ञात होता है कि शासन व्यवस्था राजतन्त्रात्मक व्यवस्था पर आधारित थी। चीन में 'राजत्व में देवत्व' की भावना प्रचलित थी जो इस बात का द्योतक है कि राजा को ईश्वर का पुत्र एवं प्रतिनिधि

माना गया। जो धर्म, शासन, न्याय व कानून का सर्वोच्च अधिकारी होता था। राजा की सहायता हेतु पुरोहितों को नियुक्त किया जाता था। पुरोहितों का मुख्य कार्य धार्मिक अनुष्ठानों को करना था, परन्तु वह शासन संचालन में भी सहायता करते थे। राजा राज्य में सभी प्रकार के प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति करता था। यद्यपि राजा ही सर्वोच्च अधिकारी था लेकिन वह जनता की भावनाओं और परम्परा के सादृश्य ही कार्य करता था। इसके अलावा शासन व्यवस्था में 'सेन्सर' नामक अधिकारी भी होता था जो प्रशासन की देखभाल करने वाली परिषद् का अध्यक्ष होता था। प्राचीन काल में सम्राट को 'वांग' या 'वेंग' कहा जाता था।

मन्त्रिपरिषद्—चीनी साम्राज्य में राजा को परामर्श देने के लिए एक मन्त्रिपरिषद् होती थी। इतिहासकारों के अनुसार इस मन्त्रिपरिषद् में 4 सदस्य होते थे। इसका अध्यक्ष राजकुमार होता था। इसके अलावा 6 सदस्यों वाली एक अन्य समिति भी थी। ये सभी प्रकार के विभाग को संभालते थे, यथा—धर्म, न्याय, शिक्षा, युद्ध, रक्षा, दण्ड, लोकसेवा व सार्वजनिक निर्माण इत्यादि।

सामन्ती वर्ग—सामन्त वर्ग का उदय शांग काल में ही हो चुका था। शांग राजवंश के राजाओं के अधीन सामन्ती राज्य होते थे। ये सामन्त, युद्ध में असफल होने के पश्चात् राजा की अधीनता स्वीकार करते थे। हालांकि ये राज्य के अधीन होते हुए भी अपने क्षेत्रों में स्वतन्त्र रूप से शासन चलाते थे और इनके ऊपर किसी भी प्रकार को केन्द्रीय नियन्त्रण नहीं होता था। चाऊ युग में सामन्त काफी संगठित हो गये थे। वूवांग ने सामन्तों की 5 श्रेणियाँ बतायीं, यथा—कुन, जे, नान, हाऊ एवं पो। सामन्तों का निवास स्थान 'दुर्ग' होता था। दुर्ग को सेना द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाती थी। राजा इन्हें सैनिक सहायता देता था। कालान्तर में सामन्तवाद के कारण प्रशासन में अत्यधिक विकेन्द्रीकरण की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी जिससे राज्य की सम्प्रभुता राजा एवं सामन्तों में विभाजित थी। कन्फ्यूशियस इस कुलीन तन्त्रीय व्यवस्था के सम्पर्क थे। उनके अनुसार राज्य तथा समाज के स्तरण की इस परम्परा का सम्मान किया जाना चाहिए और इसी कुलीन वर्ग के हाथों में समाज के संचालन की जिम्मेदारी होनी चाहिए। मूलत: कन्फ्यूशियस एक ऐसी सामन्ती राज्य की स्थापना करना चाहते थे जिसमें एक प्रबल केन्द्रीय सत्ता के अधीन राष्ट्र एकजुट रहे। इसलिए तत्कालीन समय में जब समाज में बदलाव आ रहा था और जागीरदारी व्यवस्था की शुरुआत हो रही थी, तो यह देखकर कन्फ्यूशियस को सन्तोष नहीं हुआ। क्योंकि यह व्यवस्था सामन्ती व्यवस्था को प्रतिस्थापित कर रही थी। उनकी यह मान्यता थी कि इस बदलाव के फलस्वरूप लोगों में नैतिकता का अभाव हो रहा है और वे कर्तव्यपालन से अनिच्छुक हो रहे हैं। कन्फ्यूशियस की दृष्टि में यदि कोई व्यक्ति राजा की आज्ञा का पालन न करे तो वह अपराधी है और दण्ड के योग्य है। अत: कन्फ्यूशियस ने तत्कालीन शासन व्यवस्था के तहत उच्च आदर्श को प्रस्तुत किया।

सैनिक व्यवस्था (Military System)—शांग राजवंश के समय चीन की सैनिक व्यवस्था काफी सुदृढ़ थी। सैन्य संचालन के क्रिया-कलापों के बारे में विस्तृत विवरण का अभाव है। हालांकि इतना अवश्य ज्ञात होता है कि युद्ध को शुरू करने से पूर्व ज्योतिषियों से सलाह-मशविरा किया जाता था। योजनाबद्ध युद्ध आमतौर बसन्त ऋतु में आरम्भ किया जाता था। परन्तु अनपेक्षित युद्धों के लिए कोई निर्धारित समय नहीं था। चीनी लोग युद्ध-कला में निपुण थे। युद्ध के दौरान कुल्हाड़ी, बर्छे, भाले, धनुष-बाण एवं सिर व शरीर की रक्षार्थ हेतु धातु निर्मित शिरस्त्राण और कवच का प्रयोग करते थे। अनयांग नगर की खुदाई में 70 से ज्यादा कांस्य से बने शिरस्त्राण (Helmet) प्राप्त हुए हैं। युद्ध के दौरान घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथों का उल्लेख मिलता है। रथों की तुलना में पैदल सैनिकों की संख्या अधिक थी। सैन्य अधिकारियों की नियुक्ति मुख्य रूप से कुलीन वर्ग से की जाती थी। युद्ध के समय बन्दी बनाये गये विरोधी सैनिकों को दास बनाया जाता था या उनकी बलि दी जाती थी। प्राचीन चीन के 20 वर्ष से 60 वर्ष तक के लोगों को अनिवार्य रूप से सैनिक शिक्षा दिये जाने का प्रावधान था। चीन के ऐतिहासिक स्रोत के आधार पर चीनी राज्य की लगभग 75,000 सैनिकों की संख्या का उल्लेख किया गया है जिसमें पैदल सैनिकों की संख्या लगभग 72,000 थी। चीनी साम्राज्य में 6 सैन्य विभागों की स्थापना की गयी थी। प्रत्येक विभाग में 12,500 सैनिक कार्यरत थे। इनका एक प्रमुख सेना अध्यक्ष होता था। इस प्रमुख सेना अध्यक्ष के अन्तर्गत 6-6 सहायक सेना के अध्यक्ष नियुक्त किये जाते थे। सहायक सेना के अध्यक्ष के तहत 500 सैनिकों के सेनापति और इन सेनापति के अधीन 100 सैन्य सरदार थे। इन सैन्य सरदार के मातहत 25 सैनिकों के नायक नियुक्त किये जाते थे।

प्रान्तीय व्यवस्था—प्राचीन चीन का साम्राज्य कई हिस्सों (प्रान्तों) में विभक्त था। इन प्रान्तों के प्रमुख अधिकारी के रूप में राजकुमार या सामन्त को राजा द्वारा नियुक्त किया जाता था। चीन के प्रान्तों को 'हीन' नाम से पुकारा जाता था। प्रान्तों के प्रमुख अधिकारियों द्वारा राज्य में राजस्व वसूली, सुरक्षा, पत्र-व्यवहार एवं न्यायिक कार्यों का निष्पादन किया जाता था।

स्थानीय व्यवस्था—स्थानीय व्यवस्था के अन्तर्गत 'ग्राम' सबसे छोटी इकाई थे। परिवार के मुखिया मिलकर ग्राम के मुखिया का चुनाव करते थे। यह ग्राम का मुखिया शासन के प्रति जवाबदेही था। ग्राम के समूह को श्हीनश कहा जाता था। इन प्रत्येक 'हीन' के तहत राजस्व अधिकारी एवं एक न्यायिक अधिकारी शामिल होता था। हीन से बड़ी इकाई 'फू' थी, जिसके अधीन दो या तीन 'हीन' थे। ये दो या तीन हीन परस्पर मिलकर 'टाउ' और दो-तीन टाउ मिलकर 'सेंग' (प्रान्त) का निर्माण करते थे।

नागरिक प्रशासन सेवा—प्राचीन चीन में नागरिक प्रशासन सेवा के तहत प्रशासनिक अधिकारियों का चयन किया जाता था जिन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं द्वारा नियुक्त किया जाता था। इस पद्धति की शुरुआत हान राजवंश के शासकों द्वारा की गयी थी। इस प्रतियोगिता परीक्षा में दर्शन, तर्कशास्त्र, काव्य, न्याय एवं आचार इत्यादि सम्बन्धित विषयों पर प्रश्न पूछते थे। इस परीक्षा में सभी पुरुष बैठ सकते थे। इसमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता था। सम्राट और प्रशासनिक अधिकारी राज्य के लिए कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करते थे। अतः इन्हीं प्रशासनिक अधिकारियों की वजह से चीनी राज्य में स्थायित्व एवं दीर्घजीविता बनी रही।

सामाजिक व्यवस्था (Social System)—प्राचीन समय में चीन का समाज कई वर्गों में विभक्त था। वर्ग का विभाजन कर्म आधारित था, न कि जन्म आधारित। प्राचीन चीनी सभ्यता में सम्राट और राज्यों के स्वामियों का वर्ग सबसे ऊँचा समझा जाता था। शासक वर्ग के नीचे पाँच प्रमुख वर्ग थे, यथा—बुद्धिजीवी, व्यापारी, कारीगर, किसान एवं दास। चीनी सभ्यता में साहित्यकारों एवं बुद्धिजीवियों का अत्यधिक सम्मान किया जाता था। प्राचीन चीन में कोई भी व्यक्ति शिक्षा के माध्यम से समाज में स्थान हासिल कर सकता था। मगर यह स्थिति केवल सैद्धान्तिक रूप में ही थी, यथार्थ में स्थिति इससे अलग थी। शिक्षा के महँगी होने के कारण सामान्यतः धनी वर्ग का व्यक्ति ही शिक्षा ग्रहण कर समाज में उच्च स्थान प्राप्त करता था। चीनी समाज में रोचक तथ्य यह है कि प्राचीन काल की सामाजिक व्यवस्था में योद्धाओं की स्थिति निम्न थी। किसानों एवं मजदूरों की स्थिति दयनीय थी। इस वर्ग को बेगार भी करनी पड़ती थी। दास वर्ग का समाज में सौदा होता था। व्यापारी और शिल्पी की स्थिति मध्यम वर्ग की तरह थी। चीनी समाज में विद्वानों का एक अलग वर्ग था जिसे 'मन्दारिन' कहा गया। समाज में इस वर्ग का अत्यधिक सम्मान था। इस वर्ग में शामिल होने के लिए युवाओं को काफी जटिल परीक्षाएँ पास करनी पड़ती थीं।

परिवार (कुटुम्ब)—प्राचीन चीन की सभ्यता में समाज की आधारभूत इकाई परिवार था। परिवार में वृद्ध स्त्री और पुरुष का प्रमुख स्थान था। समाज में परिवार से अलग होना असामाजिक माना जाता था। परिवार के साथ धोखा करना और वंश समाप्त करना बड़ा अपराध समझा जाता था। समाज में संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था थी तथा परिवार पितृसत्तात्मक थे, लेकिन माताओं को भी उच्च स्थान प्राप्त था। चीनी परिवार को आपसी सम्बन्धों को मधुर एवं स्थिर बनाये रखने के लिए आदर शिष्टाचार के नियम बनाये जाते थे। परिवार में अपने पूर्वजों की पूजा चीनी समाज की एक महत्वपूर्ण परम्परा होती थी। पिता की मृत्यु के उपरान्त ज्येष्ठ पुत्र ही उत्तराधिकारी होता था। परिवार में माता की सत्ता पिता की अपेक्षा गौण थी। परन्तु पिता की मृत्यु के बाद माता की सत्ता का उल्लंघन अपराध समझा जाता था। चीनी समाज में माता-पिता के प्रति सन्तान की आज्ञाकारिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों के साथ स्नेह रखना सर्वोत्तम मानवीय गुणों को परिलक्षित करता है। चीनी परिवार में वैवाहिक संस्कार को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। एक ही परिवार में वैवाहिक सम्बन्ध पर प्रतिबन्ध था। विवाह हेतु वर की आयु 20 वर्ष एवं कन्या की आयु 17 वर्ष निर्धारित की गयी थी। चीन के काव्य संग्रह में विवाह पद्धति का विस्तार से विवरण मिलता है। पुनर्विवाह व विधवा विवाह का प्रचलन था। विवाह में दहेज भी दिया जाता था। उच्च वर्ग में बहु-विवाह प्रथा का चलन था।

स्त्रियों की दशा—प्राचीन चीनी समाज में पितृसत्ता होने की वजह से स्त्रियों का स्थान पुरुषों की तुलना में गौण था। लेकिन प्राचीन समय में स्त्रियों की स्थिति काफी सम्मानजनक थी। परन्तु बाद में स्त्रियों की दशा

दयनीय होती गई। पुरुषों की अपेक्षा उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। शांग वंश के समय सम्राट स्त्रियों के प्रति सभ्य आचरण करते थे। लेकिन चाऊ साम्राज्य के काल में यह स्थिति अशिष्ट हो गयी। कन्या का जन्म अशुभ माना गया था। स्त्रियों के नि:सन्तान होने पर पुरुष उन्हें तलाक दे सकते थे। पर्दा प्रथा का भी व्यापक रूप से प्रचलन हो गया था। चीनी सभ्यता में स्त्रियाँ दो वर्गों में विभक्त थीं—पहला कुलीन वर्ग एवं दूसरा सामान्य वर्ग। कुलीन वर्ग की स्त्रियों को उचित शिक्षा, नृत्य व संगीत और शासन में भागीदारी मिलती थी। वहीं सामान्य स्त्रियाँ गृह कार्य के अलावा कृषि का कार्य करती थीं।

भोजन एवं रहन-सहन—प्राचीन चीनी समाज में अमीर वर्ग एवं गरीब वर्ग में भोजन और रहन-सहन भी वर्गों के आधार पर बँटा हुआ था। सम्पन्न लोग सुख-सुविधा के साथ भव्य भवनों में निवास करते थे और भोजन में माँस, मछली व उच्च प्रकार के व्यंजन का प्रयोग करते थे। अमीर वर्ग कांसे के बने पात्र में भोजन ग्रहण करते थे। वहीं दूसरी तरफ गरीब वर्ग के लोग मिट्टी एवं घास-फूस के बने मकानों में रहते थे और साधारण भोजन के साथ-साथ मोटे अनाज जैसे- ज्वार, बाजरा इत्यादि से बना हुआ भोजन ग्रहण करते थे। प्राचीन चीनी लोगों में वेशभूषा व आभूषण के प्रति आकर्षण था। प्रारम्भ में यह लोग जूट से बने हुए परिधानों को पहनते थे, परन्तु बाद में इन्होंने सूती वस्त्र भी पहनना आरम्भ कर दिया था। हाथी दाँत, सीपी, शंख इत्यादि द्वारा आभूषण बनाये जाते थे। स्त्रियाँ फूलों का उपयोग अपने शरीर को सुन्दर बनाने के लिए किया करती थीं। चीनी समाज में अनेक उत्सव और त्यौहार का प्रचलन था जो आमतौर पर उपयोगिता के आधार पर मनाये जाते थे, यथा-बसन्त ऋतु, कृषि इत्यादि। ये लोग त्योहारों पर आतिशबाजी भी करते थे। मनोरंजन हेतु संगीत-यन्त्रों का उपयोग किया जाता था। चीनीवासी ताश, नाटक व शतरंज इत्यादि के शौकीन थे।